कोचिंग प्रणाली के कारण बोर्ड एवं विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष में कम होती हुई उपस्थिति का अध्ययन

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर की पी.एच.डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत संक्षेपिका

शोध निर्देशिका	शोधकर्त्री
डॉ. (प्रो.) मंजू शर्मा	पायल
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर	शिक्षा संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

''कोचिंग प्रणाली के कारण बोर्ड एवं विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष में कम होती हुई उपस्थिति का अध्ययन''

''शिक्षा जिन्दगी की तैयारी नहीं हैं ;

शिक्षा खुद जिन्दगी है।'' **– जॉन डिवी**

प्रस्तावना :–

किसी भी समाज की उन्नति का अनुमान उस समाज की शिक्षा के स्तर से लगाया जा सकता है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में शिक्षा का विशेष महत्त्व है। हमारे राष्ट्र में भाषा, क्षेत्र, जाति, धर्म आदि विभिन्नताओं का मिश्रण है, जिसका विकास शिक्षा व शिक्षक पर निर्भर करता है।

शिक्षा शब्द अपने आप में अनेक अर्थों को लिए हुए है। शिक्षा मानव जीवन को उचित आचरण, दक्षता, शिक्षण और ज्ञान प्रदान करती है।

शिक्षा की अवधारणा –

शिक्षा समाज को एक पीढ़ी द्वारा अपने से निम्न पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तान्तरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति को निरन्तर बनाए रखती है।

शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की ''शिक्ष्'' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। शिक्ष् का अर्थ है सीखना और सिखाना। शिक्षा शब्द का अर्थ हुआ सीखने–सीखाने की क्रिया।

''डॉ. भीमराव अम्बेड़कर'' के अनुसार :–शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।

कोचिंग की अवधारणा :–

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय शिक्षा क्षेत्र ने अपने भीतर एक समानांतर शिक्षा प्रणाली का जन्म देखा है। यह प्रणाली जिसे कोचिंग के रूप में जाना जाता है, भारतीय छात्रों के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, चाहे उनकी शैक्षणिक पृष्ठभमि कुछ भी हो।

कोचिंग अंग्रेजी का शब्द है जिसका अर्थ होता है प्रशिक्षण देना, पढ़ाना या शिक्षा देना। इस प्रकार कोचिंग संस्थान का अर्थ हुआ ऐसा स्थान जहाँ परीक्षा की तैयारी करवाई जाती है। कोचिंग और शिक्षा समान अर्थ रखने वाले शब्द है परन्तु व्यवहारिक रूप से कोचिंग ज्यादा व्यवसायिकता का रूप है।

कोचिंग किसी व्यक्ति के कौशल और ज्ञान को विकसित करने के बारे में है, ताकि उनके कार्य प्रदर्शन में सुधार हो, संगठनात्मक उद्देश्यों की उपलब्धि हो सके। यह काम के उच्च प्रदर्शन और सुधार को लक्षित करता है, हालांकि यह किसी व्यक्ति के निजी जीवन पर भी प्रभाव डाल सकता है। कोचिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य प्रदर्शन को बहतर बनाना है और अतीत या भविष्य के बजाय यहाँ और अब पर ध्यान केन्द्रित करना है।

अध्ययन का औचित्य :– प्राचीन काल में गुरूकुल शिक्षा के केन्द्र थे। जिनमें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी। वर्तमान काल आर्थिक युग है, अतः शिक्षा का भी व्यवसायीकरण हो गया है। शिक्षा के व्यवसायीकरण से भारत में कोचिंग संस्थानों की बाढ़ सी आ गई है। हर जगह कुकरमुतों की तरह कोचिंग संस्थानों की स्थापना हो रही है तथा अधिकांश संस्थानों का एक मात्र उद्देश्य है व्यवसायिक दृष्टिकोण। आज कोचिंग संस्थानों में छात्रों का नामांकन करना एक बहुत ही आम बात हो गई है। प्रारम्भ में कोचिंग उन छात्रों के लिए एक नकल तंत्र के रूप में उभरा जो सामान्य पाठ्यक्रम से सम्बन्धित अपने प्रदर्शन में पीछे रह गए थे।

कोचिंग संस्थानों में छात्र–छात्राओं की बढ़ती संख्या भारतीय शिक्षा प्रणाली की एक महत्त्वपूर्ण समस्या बनकर उभरी है। यह जानकर हैरानी होगी कि कोटा के प्रसिद्ध ''एलन'' कोचिंग संस्थान में एक लाख विद्यार्थी अध्ययनरत है, जिस वजह से इनका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी दर्ज है। बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएँ अपने शैक्षणिक जीवन में सफल होने के लिए कोचिंग संस्थान का सहारा ले रहे है। आज डमी विद्यालय का चलन भी दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, जिस वजह से ग्यारहवीं

व बारहवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी विद्यालय में अनुपस्थित रहने लगे है। यह आँकड़ा दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। बाल चिकित्सा अनुसंधान के अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल के एक अध्ययन के अनुसार औसतन 17.84 प्रतिशत विद्यार्थी लगभग हर दिन अनुपस्थित होते है। इस तरह शिक्षार्थियों की कम होती उपस्थिति हमारे विद्यालयों की प्रमुख समस्या बन गया है।

इस समस्या के पीछे छिपे मुख्य कारणों को जानने के लिए शोधार्थी ने इस समस्या का चयन किया है। शोधार्थी के सामने निम्न प्रकार के प्रश्न उभरते है :–

- क्या कोचिंग प्रणाली एक आवश्यकता है या एक प्रवृत्ति।
- कोचिंग प्रणाली पर निर्भरता मिटाने के लिए शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं में किस तरह के बदलाव किए जाने चाहिए।
- उचित गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध न होने की वजह से शिक्षार्थी कोचिंग संस्थान का सहारा ले रहे है।

यद्यपि कोचिंग प्रणाली से सम्बन्धित कुछ अध्ययन किये गये है, जिसका विवरण इस प्रकार हैंः–

- **सोनारवाला एम. एस. (1965) – "बाम्बे में कोचिंग कक्षाओं की लोकप्रियता के कारणों का अध्ययन" बॉम्बे विश्वविद्यालय, बॉम्बे**

  उपर्युक्त शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने यह निष्कर्ष पाया कि विद्यालय में कक्षाओं में छात्रों की अधिक संख्या के कारण शिक्षक और छात्रों के बीच व्यक्तिगत ध्यान की कोई गुजांइश नहीं है। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि कोचिंग कक्षाओं में शिक्षण विद्यालयों की तुलना में अधिक कुशल है और नियमित विद्यालयों में अधिक संख्या में अप्रशिक्षित शिक्षक है।

- **एनॉन (1992) – "कोचिंग संस्थानों में विद्यार्थियों के प्रवेश सम्बन्धित प्रमुख कारकों का अध्ययनन" लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ**

  उपर्युक्त शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने यह निष्कर्ष पाया कि :–

  i. हाई स्कूल स्तर पर कोचिंग संस्थानों में प्रवेश लेने वालों में विज्ञान से लड़कों की और कला में लड़कियों की संख्या अधिक है।

ii. लड़कों को गणित विषय में और लड़कियों को अंग्रेजी विषय में कोचिंग की आवश्यकता है।

iii. 2000/– रू. से 4000/– रू. मासिक आय वाले परिवार के छात्रों ने अधिक कोचिंग ली।

- **तिवारी श्रुति (2007) ''कोचिंग कक्षाओं के प्रति छात्रों की रूचि के लिए जिम्मेदार कारकों का अध्ययन'' सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय, जयपुर**

  उपर्युक्त अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्नलिखित निष्कर्ष पाए :–

i. शिक्षक दक्षता कोचिंग कक्षाओं में भाग लेने के लिए जिम्मेदार कारक है।

ii. परिवार का दबाव विद्यार्थियों का कोचिंग कक्षाओं में प्रवेश लेने के लिए एक जिम्मेदार कारक नहीं है।

iii. परिवार और माता–पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि महत्त्वपूर्ण भूमिका निभारती है।

iv. अंधा अनुयायी रवैया जिम्मेदार कारक नहीं है।

- **मिश्रा पतंजलि, सिंह भूपेन्द्र (2017) ''कोटा की कोचिंग कक्षाओं पर एक अध्ययन'' वर्धमान महावीर ओपन महाविद्यालय, कोटा**

  उपर्युक्त अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्नलिखित निष्कर्ष पाए :–

i. लगभग आधी संख्या में छात्र सफलता के लिए आशान्वित है।

ii. अधिकांश छात्रों ने खेल के लिए समय न होने के बारे में बताया।

iii. अधिकांश छात्रों ने अपने माता–पिता से सफलता के लिए उच्च दबाव की सूचना दी।

iv. अधिकांश छात्रों ने बताया कि वे कोचिंग में भाग ले रहे है क्योंकि उनके माता–पिता चाहते है।

v. अधिकांश छात्रों ने कहा कि तनाव से लड़ने के लिए सूर्य नमस्कार और अन्य गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

- **एजाज तसनीम, (2018) ''पी.एस.ए.टी. में स्कूल उपस्थिति का शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव का अध्ययन'' ब्रिटिश विश्वविद्यालय, दुबई**

  उपर्युक्त शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने यह निष्कर्ष पाया कि जिन विद्यार्थियों की स्कूल में उपस्थिति अधिक रही उनका शैक्षिक प्रदर्शन भी उच्च स्तर का रहा, लेकिन साथ ही शोधकर्ता ने अपने

अध्ययन में यह भी पाया कि इस निष्कर्ष के प्रमाणित तथ्य प्राप्त नहीं हुये है। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में यह भी बताया कि उसके अध्ययन के आँकड़े यह बताने में असमर्थ रहे कि विद्यार्थी ने शिक्षक के साथ अध्ययन से संबंधित समय व्यतीत किया।

- **स्क्यू डेनिस, (2020) ''सार्वभौमिक प्राईमरी शिक्षा में स्कूल उपस्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन में संबंध का अध्ययन'' कोबेल विश्वविद्यालय, युगांडा**

  उपर्युक्त शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने यह निष्कर्ष पाया कि स्कूल में उपस्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन में सकारात्मक संबंध पाया जाता है, लेकिन स्कूल में उपस्थिति का शैक्षिक प्रदर्शन पर बहुत सीमित मात्रा में प्रभाव पड़ता है। शोधकर्ता के अनुसार शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव डालने वाले अन्य कारकों पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

कोचिंग संस्थानों की बढ़ती लोकप्रियता के कारणों से सम्बन्धित अध्ययन तो शोधकर्त्री के दृष्टिगत तो हुए परन्तु कोचिंग प्रणाली के कारण कम होती उपस्थिति से सम्बन्धित अध्ययन न्यून ही दृष्टिगत हुए। अतः इससे शोधकर्त्री को समस्या चयन में दिशा मिली। इसीलिये शोधकर्त्री द्वारा निम्नलिखित शोध समस्या का चयन किया गया।

समस्या कथन :–''कोचिंग प्रणाली के कारण बोर्ड व विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष में कम होती हुई उपस्थिति का अध्ययन''।

अध्ययन के उद्‌देश्य :– शोध कार्य की सफलता हेतु शोधकर्त्री द्वारा निम्न उद्‌देश्यों का चयन किया गया हैं :–

1. राजस्थान एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों का कोचिंग संस्थान के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
2. सरकारी व निजी विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष के शिक्षार्थियों का कोचिंग संस्थान के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
3. राजस्थान एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष में कम होती उपस्थिति के कारणों का अध्ययन।

4. सरकारी एवं निजी विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष में कम होती उपस्थिति के कारणों का अध्ययन।
5. बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम की सहभागिता का अध्ययन।
6. बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी कार्यक्रम की मूल्यांकन प्रणाली में उपस्थिति सम्बन्धित महत्ता का अध्ययन।
7. बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी कार्यक्रम के शिक्षार्थियों के अभिभावकों का कोचिंग संस्थान के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
8. बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर कम होती उपस्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पनाएँ :–

- राजस्थान एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड कार्यक्रम के विद्यार्थियों का कोचिंग संस्थान के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- सरकारी व निजी विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों का कोचिंग संस्थान के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- राजस्थान एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष में कम होती उपस्थिति के कारणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- सरकारी एवं निजी विश्वविद्यालय कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष में कम होती उपस्थिति के कारणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में प्रतियोगी परीक्षाओं सम्बन्धी पाठ्यक्रम की सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी कार्यक्रम की मूल्यांकन प्रणाली में उपस्थिति सम्बन्धित महत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी कार्यक्रम के शिक्षार्थियों के अभिभावकों का कोचिंग संस्थान के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

- बोर्ड एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर कम होती उपस्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।

न्यादर्श :– न्यादर्श जनसंख्या में से चुनी गई कुछ इकाइयों का समूह है जो समस्त जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

गुडे एवं हाट के अनुसार :– ''एक न्यादर्श जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, एक विस्तृत समूह का एक लघु प्रतिनिधि है।''

प्रस्तावित शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के विद्यालयों और महाविद्यालयों में से 600 ईकाइयों को न्यादर्श के रूप में लिया जाएगा।

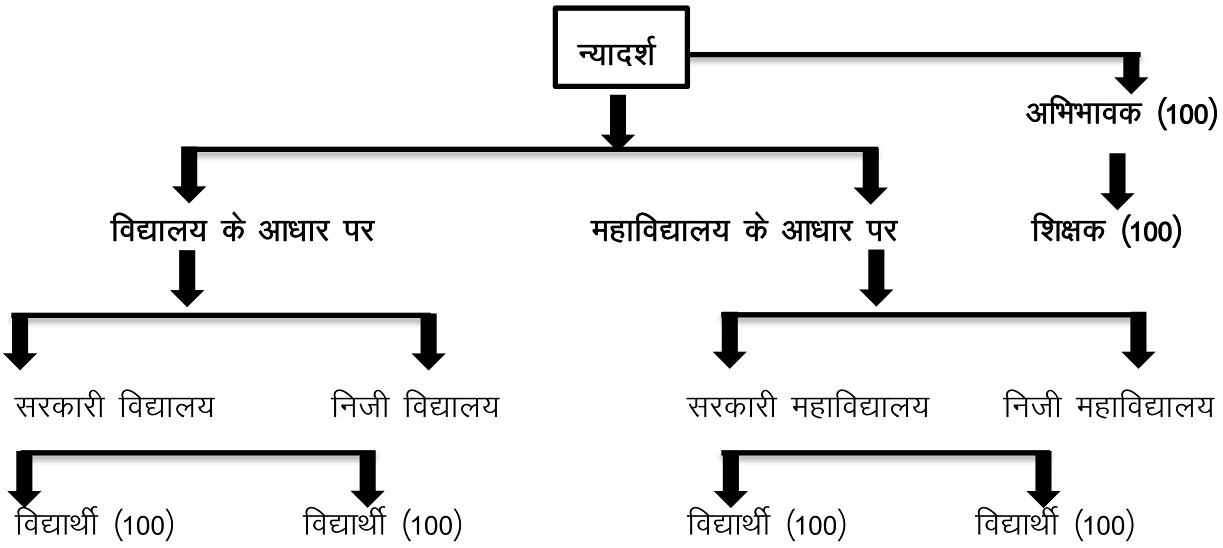

शोध विधि :–प्रस्तावित शोध में सर्वेक्षण विधि द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया जाएगा।

शोध उपकरण :–प्रस्तावित शोध अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा आँकड़ों का संकलन किया जाएगा।

शोध हेतु सांख्यिकीय विधियाँ :–प्रस्तावित शोध अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, टी अनुपात सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

परिणाम निष्कर्ष एवं सुझाव :– प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जायेगा एवं भविष्य हेतु सुझाव सुनिश्चित किये जायेंगे।

<u>सन्दर्भ</u> :–

- सोनारवाला, एम.एस. (1965) बॉम्बे में कोचिंग कक्षाओं की लोकप्रियता के कारणों का अध्ययन, एम. एड. लघु शोध प्रबन्ध, बॉम्बे विश्वविद्यालय, बॉम्बे।
- एनॉन (1992) कोचिंग संस्थानों में विद्यार्थियों के प्रवेश सम्बन्धित प्रमुख कारकों का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- तिवारी, श्रुति (2007) कोचिंग कक्षाओं के प्रति छात्रों की रूचि के लिए जिम्मेदार कारकों का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय, जयपुर
- मेहरोत्रा, एन.के. (2008) एम.एड. गाईड, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–2
- मिश्रा पतंजलि, सिंह भूपेन्द्र (2017) कोटा की कोचिंग कक्षाओं पर एक अध्ययन, यूरोपीय शैक्षिक अनुसंधान वॉल्यूम–बी, अंक–6
- एजाज तसनीम (2018) पी.एस.ए.टी. में स्कूल उपस्थिति का शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, ब्रिटिश विश्वविद्यालय, दुबई
- स्क्यू डेनिस (2020), सार्वभौमिक प्राईमरी शिक्षा में स्कूल उपस्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन में संबंध का अध्ययन, अफ्रीकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल वाल्यूम 8(2), पी.पी.–152–160
- www.achikhabar.com
- www.indiatoday.in